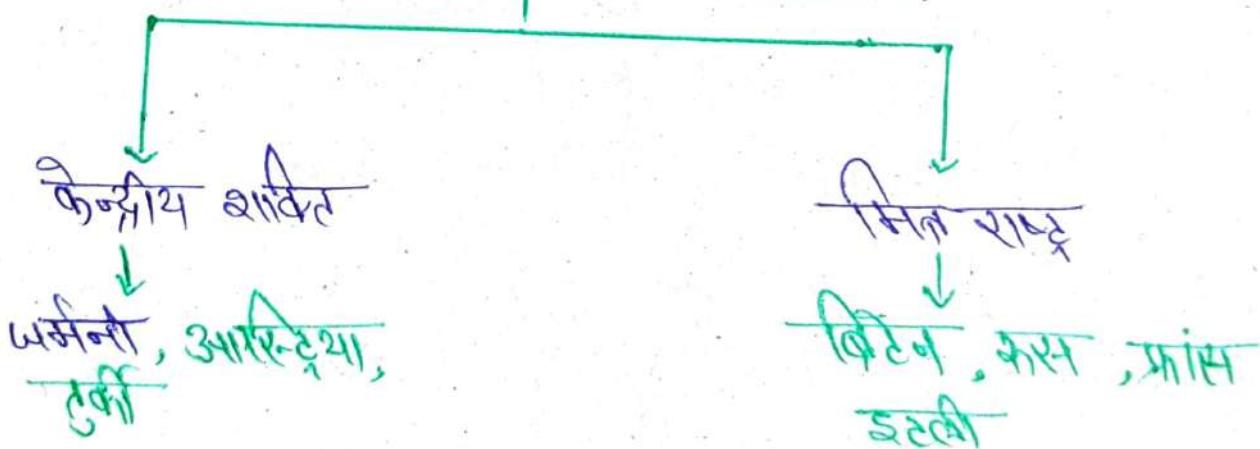


भारत में राष्ट्रवाद• राष्ट्रवाद का अर्थ :-

उपरी राष्ट्र के प्रति जुम की भावना, सूक्ष्मता की भावना तथा सब समाज चेतना राष्ट्रवाद कहलाती है।

पृथक् लोग सब समाज सांतिकानिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक विरासत माझा बरते हैं। कई बार लोग विभिन्न भाषाओं में समूद्र राष्ट्र के प्रति जुम उन्हें इन सभी भारत (जैसे भारत) लेकिन भी बाधे रखता है।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918)

मित्र राष्ट्र का विजय हुई।

पृथक् विश्व युद्ध, खिलाफत, और असद्योग्यता

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) ने सब नए नये राजनीतिक और अर्थीक निश्चाही देया कर दी दी।

भारत की सुध के दौरान विभिन्न अमर-यात्रा  
का सामना करना पड़ा था।

- रक्षा खर्च में वृद्धि
- सुध के दौरान कीमतों में वृद्धि हुई।
- उत्तीर्ण क्षेत्रों में लिपाहियों की जबरन छाती किया गया।
- 1918-19 और 1920-21 के दौरान भारत के कई द्विस्तरों में फसल खराब हो गई।
- यह दोनों के बाद भी मुद्रकर्ते जम लही हुई।

### पृथम विश्वयुद्ध के भारत पर पड़ने वाले प्रभाव :-

- सुध के कारण एक संबंधी खर्च में वृद्धि हुई। इसे सुध लेने और करों में वृद्धि करके वित्तपोषित किया गया था।
- सुध के दौरान वर्षतुओं की कीमतें लह गई हो गई। 1914 से 1918 के द्वितीय लोध कीमतें दोगुनी हो गई। मूल्य वृद्धि के कारण आम लोगों को भवसे ज्यादा परेशानी हुई।
- भारत के कई भागों में सफल खराब होने से खोदनों की आरोपी कमी हो गई। इनफ्लूएंजा महामारी और अमर-या की ओर लहा दिया। 1921 की जनगणना के अनुसार अंकाल और मदामारी के कारण 120 लाख और 130 लाख तक लोग आरोपी भरे।

30

~~मैंना की रगड़ीण लेखों की जबरन भर्ती भी हो~~  
~~भाष्य आणोऽरा का रुप अध्य करण था।~~

## मत्याग्रह का विचार

### मत्याग्रह का अर्थ:-

- यह मत्य तथा आदिसा पर आचारित रुप भर लेद का जन अंदोषन करने का प्रक्रिया था।

### महात्मा गांधी के मत्याग्रह का अर्थ:-

- मत्याग्रह ने मत्य पर बह दिया।
- ~~गांधीजी का मानना था कि यदि कोई सही मत्स्याग्रह कुलसदि के लिए लड़ रुदा हो तो उसे अपने लड़ने के लिए ताकत की जरूरत नहीं होती है।~~ मत्याग्रह करने वाले को अदिसा के माध्यम से रुप मत्याग्रही लकड़ी जीत सकते हैं।

### महात्मा गांधी द्वारा भारत में मत्याग्रह की शुरुआत

- महात्मा गांधी 1915 में यक्षिणी अफीका में भारत लौटे थे।
- इससे पहले वे याक्षण अफीका में थे, उन्होंने रुप भर लेद के अनंतायोग्यन के रास्ते मस्ति पर चलने दुष्ट वहाँ की गत्तेपक्षीय सरकार से भित्तित्वक भोदा, लिया था। इस अधिति की वे मत्याग्रह कर्ते थे।
- भारत अने के लाय, गांधीजी ने कहा:

- i) चंपारण आंदोलन (1917)
- ii) खेड़ा आंदोलन (1917)
- iii) अमरठाबाद आंदोलन (1918)

### चंपारण आंदोलन, विधार (1917) :-

- 1917 का चंपारण सत्याग्रह क्रितिश भारत में महाला गांधी के नेतृत्व में लिया गया प्रदर्श सत्याग्रह आंदोलन था और इसे भारतीय एवं लंबांवाले आंदोलन में क्रिहास्मिक रूप से महत्वपूर्ण विद्युद भाना जाता है।
- यह विद्युद भारतीय उपमहाद्वीप के विधार के चंपारण जिले में क्रितिश औपनिवेशिक जल के दोरान दुआ था। किसान जीव की श्रेष्ठता के लिए बहुत कम भुगतान लिए जाने के लियाँ प्रदर्शन कर रहे थे।

### खेड़ा आंदोलन, (1917) :-

- गुजरात के खेड़ा जिले के किसान फसल लर्नाद होने के बारे संकट में थे।
- भारत ने मूराजान्व माप फर्जे से इनकार कर दिया तथा इसकी जुली वस्तुती यह थी कि दिया
- महाला गांधी ने किसानों को सलाद दी कि वे तब तक राजन्व का भुगतान न करे तक तक कि उनकी फर्ज मापी जी मांग भरी न हो जाए।

[32]

आंदोलन तक पापरस के दिया गया जब पता चला कि सरकार ने निर्देश भारी किए हैं कि शाखाव के बहुत उन किसानों से जमजब जाहरा जो मुश्तक करने वाले सक्षम हैं।

• ये हां आंदोलन के दौरान भारत के वल्लभाभाई पटेल गांधीजी के अनुयायी जन बाद।

### अद्यतालाद आंदोलन

- गांधीजी का तीसरा संघर्ष 1918 में अद्यतालाद में हुआ जब 30वें मार्च से और भित्र भाविकों के बाय विवाद में दस्तकेप करना पड़ा।
- उन्होंने शमिकों को इताल पर जाने और वेतन में 35 फतिशत वृद्धि की मांग करने की अलाद दी।
- उन्होंने इस बात पर भी दिया कि इताल के दौरान शमिकों को नियोक्ताओं के विकल्प देस्था का प्रयोग जहाँ करना परिष्ठ।
- उन्होंने इताल भारी राजने के मार्फतों के भीतर किया।
- उन्होंने भित्र भाविकों पर ध्याव डाला, जो शमिकों की वेतन में 35 फतिशत की वृद्धि देने पर सहमत हो गए।

- २५ अप्रैल १९१९ की संघर्षों को नियंत्रित करने तथा लोगों की रुक्कमिता पर अंगुष्ठ लगाने के लिए इंग्रियर नेशिस्टिव कांडसिल द्वारा मार्च १९१९ में रांभट लकड़ परिव लिया गया।
- भारतीय भायर्सों ने इसका समर्थन नहीं किया था। ऐकिन ने भी यह परिव हो गया था।
- इस विघ्यक के विवेष अद्यालत द्वारा अपराधों की बोध खुलाई का प्राप्तिका किया गया तथा इसमें आठ का कोई प्राप्तिका नहीं था।
- इस छेकट ने भायर्स को राजनीतिक गतिविधियों की कुपलेने के लिए असीम शक्ति प्रदान किये थे। इसके तहत राजनीतिक दियों को लोना या मुकदमा चलाए थे माल तक जब रखने का प्राप्तिका था।

रांभट छेकट के परिणाम

- ८ अप्रैल १९१९ की महात्मा गांधी के जेल में सफ आयित भारतीय दृताल का आयोजन हुआ।
- अलग-अलग शहरों में लोग इसके समर्थन में जिकाल पड़े - दुकानें बंद हो गई और रेल कारखानों के मध्यस्थ दृताल पर चले गये।
- लैकों, डाकखालों और रेलवे स्टेशन पर दस्ते हुए।
- अचूंडी दृक्षुभत ने राष्ट्रवादीयों पर बढ़ोर करना उठाने का नियम लिया, कई राजनीय संस्थाओं को बड़ी बना लिया गया।

## भलियावाला लाला हत्याकांड की धटकः

10 अप्रैल शान्तिपुर्ण इसके कारण लोगों ने जगह-जगह पर मरकारी अमृतसर में मार्गिल लो लाला हो गया और इसकी जेनरल डायर के हाथों में भौंप दी गई।

भलियावाला लाला का थुखद मरसहार 13 अप्रैल की उम दिन हुआ जिस दिन पंजाब में वैशाखी मनाई जा रही थी। ग्रामीणों का एक भत्या शरीक होने आया था। २५ बाजा पारे तक से बढ़ था और निकलने के राहे अंकीरथी।

जेनरल डायर ने निकलने के राहे लड़ करवा दिये और भीड़ पर गोली चलवा दी। इस दृष्टिना में सैकड़ों लोग मारे गए। सरकार का रवैया लड़ा ही छर था, इससे पारे तक हिंसा की गई। महात्मा बांधी ने आंदोलन को वापस ले लिया। क्योंकि वे हिंसा कही पारे थी।

### भलियावाला लाला हत्याकांड का प्रभाव:-

भारत के लालू और शहरों में लोग झड़की पर उतर आए।

इताले हीने लगी, लोग उत्तर से जीर्या लगी लगी और मरकारी इताले पर उत्तर

- परकार ने निर्मनतार्थी देवया आज्ञाया तथा लोगों को अपमानित और आत्क्रित किया।
- सत्याग्रहियों की बमीन पर जाक रहाइने के लिए रहड़क पर दिशकर चलने और और और साधितों (अंग्रेजी) को भवाम करने के लिए भवतुर किया गया।
- लोगों को कोई मारे गए गए तथा गुजरावला (पंजाब) के गांवों पर जम बरसाये गए।

जोट- हिंसा कैल्पते देख मदाला गांधी ने रॉल्ट एवं सत्याग्रह वापस ले लिया।

आंदोलन के विस्तार की जावश्यकता :-

- रॉल्ट सत्याग्रह मुख्यतः शहरों तक ही सीमित था मदाला गांधी को लगा कि वार्षत में आंदोलन का विस्तार होना पड़हिए। उनका मानना था कि ऐसा तभी ही स्थल है जब हिंदू और मुसलमान एक मांच पर आ जाएँ।

छिपाफत आन्दोलन :-

- छिपाफत शब्द 'खलीफा' से निकला हुआ है जो आंदोलन तुर्की का भगाए होने के भाष्य-भाष्य इस्लामिक विश्व का आध्यात्मिक नेता भी था।
- श्याम विश्व में तुर्की की हार हुई थी जहाँ वह अफगान कैल गढ़ ले ले तुर्की एवं रुद्र अपमानजनक प्रवर्ति दीभाष्य थी।

39

भारतीय 1. इसलिए खलीका ली तात्कालिक शक्तियों की रक्षा के लिए मार्च 1917 की अली बंधुओं द्वारा लगवाई गई सफलता का गठन किया गया।

- जीवन्मय अली और शौकर अली नंदुओं के साथ समय कही भुग्तान गुरुत्प्रिया, नेताओं ने इस प्रयुक्ति बनकरवाई की अम्मावना तथा शहाज़ादे गांधी के साथ चर्चा कर रखी थी,

- राजनीतिक असमर्पण के बाद भी भाईला गांधी और भाई भाई भाई भाई वाला आंदोलन शुरू करना पाए थे।

- उन्हें विवासन था कि विना रिहैब और मुस्लिम ने एक दूसरे की समीप लाए रखा थड़ा नहीं किया अधिक भारतीय आंदोलन का नियमांकन कर दिया था।

- अमिताब 1920 में कांग्रेस के नेतृत्वाता आधिकारियों के नेताओं ने भाईला गांधी के भी दूसरे नेताओं की इस बात पर राजी कर दिया कि अधिकारियों के समर्थन और स्वराज के लिए एक असदृश्य आंदोलन चाहिए।

## असंदयोग क्या है?

- अपनी इतिहास पुस्तक गांधीजी ने लिखा कि भारत में अंग्रेजी राज व साम्राज्य एकापेक्ष ही पाया कर्यालय भारतीयों ने उनके साथ संदयोग किया और उसी संदयोग के कारण अंग्रेज दुरुगत करते रहे। यह भारतीय संदयोग करना ज़ब्द कर देय, तो अंग्रेजी राज एक भाल के अन्दर फैल जायेगा और राजवाज की स्थापना ही जास्ती।
- गांधीजी की विवास था कि यदि भारतीय लोग संदयोग करना ज़ब्द करने लगे तो अंग्रेजों के पास भारत की होड़कर चले जाने के अलावा और कोई पारा नहीं रहेगा।

## असंदयोग आयोजन के कारण:

- प्रथम भारतीय की भमाई पर अंग्रेजों द्वारा भारतीय बनाना का शोषण।
- अंग्रेजों द्वारा राजवाज प्रदान करने से बुकट जाना।
- रॉल्ट हस्कट का पारित होना।
- भवियावंबा लाग इत्याकास।

## असंदयोग आयोजन की व्युत्पत्ति:

- असंदयोग आयोजन 4 सितंबर 1920 को भारतीय गांधी द्वारा शुरू किया गया एक राजनीतिक अभियान था।
- असंदयोग आयोजन विदेश शासन से भारतीय सरकार

आंदोलन का रुक्म महात्मा चरण था।  
भित्तियाँ तालम, वाग हत्याकांड के बाद महात्मा  
गांधी ने इसका नेतृत्व किया था।  
इसका उद्देश्य अदिसंक समाजों के माध्यम  
से भारत की क्रिहित व्यापक का  
विरोध करना था।

प्रभाव से दिसम्बर तक कार्रवाई में भरी  
खीचतान चलती रही।

आखिरकार दिसम्बर 1920 में कार्रवाई के मामूल  
अधिकारी में से सभक्षण हुआ और  
असंदयोग आंदोलन पर स्वीकृति की  
जोहर लगा दी गयी।

असंदयोग आंदोलन के विरोध के तरीके:-

1. अंग्रेजी भरकार सारा पृथिवी की गई उपाधियों को वापस करना।
2. लिखित अविस, सेना, पुलिस, कोटि, लेपिलेटिव काउंसिल और स्कूलों का लहिलकार।
3. विदेशी वस्तुओं का लहिलकार।
4. विदेशी कपड़ा बेचने वाली दुकानों पर धरना देना और इसका रुक्म फ्रूट रूप था।
5. यदि भरकार आजी दम्भजारी नीतियों से बाहर आये, तो संस्कृत अवस्था अंदोलन शुरू पाणा।

भित्तियाँ:- भित्तियाँ ने बड़ी मंज्या में भाग किया, पर्य पृथिवी व्यापक यी तथा तिष्ठक नीदि के लिए आजी आमूलण अपिति विरा।

## —१० आंदोलन के शुरूआत अस्था वाराणी

- असद्योग - इतिहासित आंदोलन की शुरूआत बनवाई 1920 में हुई थी।
- विजिम्बन सामाजिक अमृतों ने आंदोलन में दैरणा लेया परन्तु प्रत्येक वर्ष की अपनी अपनी आकंक्षाएँ थीं।
- यह के लिए 'स्वराज' का अर्थ पाना था।
- प्रत्येक सामाजिक समूह ने आंदोलन में भाग लेते हुए 'स्वराज' का मतलब एक ऐसा भूग लिया जिसमें उनके सभी कष्ट और सारी चुस्तीवाले खले ही जाएंगी।

### शहरों में आंदोलन :

- आंदोलन की शुरूआत शहरी मध्यवर्कों की दैरण्यारी के साथ हुई।
- विधायियों ने स्कूल - कालेज, शिक्षकों ने अपनी जीकरी तथा वकीलों ने गुरुदामा भड़ों का बहिष्कार किया और आंदोलन में शामिल हो गए।
- मकास के अलावा ज्यायातर प्रांतों में परिषद् चुनावों का बहिष्कार किया गया।
- विदेशी सामाजिकों का बहिष्कार किया गया और विदेशी कपड़ों को होली जलाई जाने लगी।
- शराब की दुकानों के समाजे प्रदर्शन किया गया।
- शहरों में असद्योग आंदोलन की भीभावना
- यादों का कपड़ा अक्सर बड़े चैमानों पर उत्पादित भीम के कपड़ों की रुक्नों में आर्थिक मँदरांगा

होता था और गाहिन लोग उसे परियज्ञ  
जैसे असमर्थ होते थे।

क्रिटिक संस्थाओं के बहिर्भास से समर्थन हो गयी।

  
वैकल्पिक भारतीय संस्थाओं की स्थापना की जानी  
भी ताकि क्रिटिक संस्थाओं के स्थान पर इनका  
प्रयोग किया जा सके। लेकिन वैकल्पिक संस्थाओं  
की स्थापना की जाफ़िया बहुत दीमी थी।

फलवत्तमप, छात्र और शिक्षक सरकारी स्कूलों में  
वापस आने लगे और वकील सरकारी अधिकारों  
में काम करने लगे।

### उत्तराखण्ड का वियोग

शहरों से बहला असदृश्यों आदीलन देहात में  
भी कैल गया था।

किसानों और अदिवासियों का संघर्ष घट-घट  
दिस्कु दो गया।

### अवध में किसान आंदोलन

किसानों का नेतृत्व लाला रामपाल ने प्रभायारों और  
तालुकेदारों के चिंताएँ किया था जो किसानों  
से भारी भारकाम लगान और तेज़ - तरट के  
कर वसूल कर रहे थे।

किसानों को बेगार करनी पड़ती थी,

किसानों की चांग था कि लगात करना किसा बाह  
बेगार खला हो और अमनकारी प्रभायारों

- लोक सामाजिक नहिं करते किया गया।
- धून 1920 में जवाहर लाल नेहरू के अवधि के बावं पा के द्वारा लिया।
- अक्टूबर 1920 तक जवाहरलाल नेहरू, बाबा राजनन्द और लुद्दी अच्युत लोडो के जीतुल ने अवधि किसान सम्भाल का गठन कर लिया गया।
- महाराष्ट्र भर में इस सुरे इवाले के गांवों में संस्थान की 300 में ज्यादा शाखाएँ बन उकी थीं।

कांग्रेस का अध्याय अवधि किसान मंदिर की आपका मंदिर में स्थापित करना था।

### असदृश्यता आंदोलन के किसानों की भागीदारी की सीमाएँ

- तत्त्वज्ञानी और भास्तरियों के द्वारा पर हमले किये गये, लालोसी को लुट लिया गया और अनाज के डोडोरों पर कब्जा कर लिया गया।
- कई पत्तानों पर रखानीय जीताओं ने किसानों की बताया कि गांधीजी ने धोषणा की है कि कौन कर नहीं देना होगा और मुझे बरीबों में पुनः वितरित करना होगा।
- सभी कार्यों और अंकाद्धारों को जंघुदी देने के लिए समझना का बास लिया जा सका।

### आदिवासियों का आंदोलन:-

- अंधे एकेका के गुड़न महाराष्ट्रीयों में अल्पसंख्यक समाज के जीतुल ने उठा गुरुलम्बा आंदोलन किया।
- विद्यार्थी जो पुस्तिकाल थानों पर हमले किये।
- गांधी की 1925 में गुरुलम्बा देशी बंदी

## लाभानों में स्वराज़ :-

- उपराम में बाजार मणिकर्णों के लिए स्वतंत्रता का असर था यह था कि वे उन चार दीवारियों के बीच चाहे आ-जा सकते हैं पिछोमे उनके बाये पासे उड़ा डाया था। उनके लिए आजायी था अन्यथा यह उस गाव के साथ मापदंड बनाए रखना चाहिए जो वे आए थे।
- लाभान श्रीगिरी के लिए स्वराज़ का अर्थ था चार दीवारियों के बाहर स्वतंत्र माप आवाजाही।
- 1859 के अंतर्देशीय अप्रवासन अधिकारियम (इन्सेक्ट) इंडियोरान सफर के दृष्टि लाभानों में कम करने वाले मणिकर्णों की बिना इनाम बांटने वाले जाते वे हुए नहीं होती थी और इनाम उन्हीं नहीं दिलाए ही मिलती थी।
- बबू ३०८१ में असद्योग अंदिलन के बारे में भुना तो हप्तों भप्तुर अपने अधिकारियों की अवैद्यता करने लगे।
- ३०८१ बाजान होइ दिए और अपने धर को चल दिए।

## असद्योग अंदिलन की समाप्ति :-

- फरवरी १९२२ में महात्मा गांधी ने अंदिलन वापस ले लिया क्योंकि जौरी चौरा के हिस्से धरना हो गई थी।
- जौरी चौरा के धरना**
- फरवरी १९२२ में, बिना किसी उक्सावे के प्रयश्चिन के अन्त वे रहे लोगों गर पुलिस ने गोलिया भाल थी। लोग अपने गुम्फे में हिस्से हो गए

ओर पुस्तक स्टॉरेज पर हमला कर दिया  
और उसमें आग लगा थी। २१ घटना।  
उत्तर प्रदेश के चौरी चौर में हुई थी।

### साविनय अवक्षा अंदोलन की ओर :-

- १९२१ के अंत तक आते ओर, कही जाहों पर अंदोलन हिमाल होने लगा था।
- फरवरी १९२२ में गांधीजी के ने असदचौरा अंदोलन को तापस लेने का निर्णय ले लिया।
- कांग्रेस के छह नेता बम तरफ के घनाघोषण में थे और युके थे।
- ते १९१७ के शपनमेट ऑफ इंडिया सेक्ट के तट भूतिय नीठर की गयी प्रांतीय परिषदों के चुनाव में हिम्मा लेना चाहते हैं थे,
- कही नेताओं का मानना था कि परिषद में एटेंट हर नीठियों का विरोध करना, सुधारों की वकालत करना, सिनेटम का भाग लेनकर अंग्रेजी नीठियों विरोध करना और यह दिखाना की जातपूल है कि ये परिषद् लोकतात्त्विक संथाएँ नहीं हैं।
- प्रांतीय परिषद् चुनाव में हिम्मा लेने की लकर कांग्रेस के नेताओं में आपसी भ्रम्मेय हुआ।

**\* आर दास** तथा मोती लाल जैक्स द्वारा स्वराज पार्टी (जनवरी १९२३) का ग्राहन किया गया ताकि प्रांतीय परिषद् के पुणाव में हिम्मा के सके।

## साइमन कमीशन

- 1927 में किटेन के भाइजन कमीशन का गठन किया गया ताकि भारत में अंतर्राष्ट्रीय अधिकारी की कार्यक्षमी का अध्ययन किया जा सके।
- 1928 में जल साइमन कमीशन भारत आया तो उसका प्रवाह भाइजन ताप्स बाजों के नाम के लिये किया गया।
- 1929 में इस आयोग का विरोध इसाया वर्योंकी इसकी रुक और भी भारतीय शामिल नहीं थे।

### साइमन कमीशन के खिलाफ प्रदर्शन :-

- कांग्रेस और भूखिलन भीड़, सभी पार्टी व प्रदर्शनी ने दिर्सा लिया।
- वायसराय लॉर्ड इरविन ने अक्टूबर 1929 में भारत के लिए 'डीमीनियन स्टेट्स' का छाप रुक प्रस्ताव रखा तभी भावी संविधान पर चर्चा के लिए रुक गोल्डमैन सम्मेलन की धोषणा की।  
भारतीयों की शक्तिकथा
- जवाहरलाल नेहरू और शुभाधन्द बोस के नेतृत्व में कांग्रेस के भीतर कट्टरपंथी आधिक भुखर हो गए।

- उद्यारवादी और जरगांधी ने तो डॉमिनियन के अधिकार ही स्वतंत्रानिक प्रणाली के पक्ष में थे। ऐसिना इस खेड़ी का प्रभाव दृढ़ता जा रहा था।

### कांग्रेस का भावी अधिकारण :-

- दिसंबर 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का भावी अधिकारण हुआ था।
- इसमें **पुर्ण स्वराज की मांग की ओपन्चारिक** काप से मान लिया गया था।

इसी अधिकारण के तथ किया गया कि **26 नवंवरी 1930 की एकत्रित दिवस के काप में मनाया जायेगा** और **उस लोगों से आदान किया गया** के समूहीनता के सिद्ध संदर्भ करे।

### लक्ष्मण चाला और असमियोग आन्धीयन (1930)

- नवंवरी 1930 में महाला गांधी ने भाई इरविन के समक्ष अपनी ॥ माझे रखी,
- ये जानी इयोग्यतियों से लेकर लिसान रुक विधिन तलीके से खुड़ी हुई थी।
- इनसे सबसे महत्वपूर्ण मांग नगर कर की थी करने की थी।

पाठ इतिहास की इनमें से किसी भी मान्यता के लिए तैयार नहीं थे।

- 12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी द्वारा जमकर यात्रा की शुरुआत।

- 6 अप्रैल 1930 को जमकर बनाकर जमकर कानून का उल्लंघन यदि धरना भवित्व प्राप्त हो आंदोलन की शुरुआत थी।

गांधी इतिहास की विशेषताएँ :-

- 5 अई 1931 ई. की गांधी इतिहास समझौता।
- भवित्व प्राप्त अवश्य आंदोलन स्थापित कर दिया जाये।
- पुस्तक द्वारा किए अत्यान्वयों की निपक्ष जांच की जाये।
- जमकर यदि भ्रातृ भ्रष्ट रहनी कर देते जाएँ।

भवित्व प्राप्त आंदोलन की खुफ्य धरनाएँ :-

- देश के विभिन्न इरासों ने जमकर कानून का उल्लंघन,
- विदेशी वर्ननाओं का बोड्डोट,
- शाश्वत की दुकानों की बद्द बाट दी गई।
- वन कानूनों का उल्लंघन।

समिन्य अवजा आदोलन के क्रिति भरकार की की

- ग्रामेन नेताओं का दिशास्तर के लिया गया;
- निर्भय इमन।
- शांतिपूर्ण महाराष्ट्रियों पर आक्रमण।
- महिलाओं व बच्चों की पिटाई,
- लड़ाक्का 1,00,000 रुपये।

समिन्य अवजा आदोलन के प्रति लोगों और औपनिवेशिक सरका की प्रतिक्रिया :-

- लोगों के मरकारी बाजूओं की फँगे करना शुरू किया।
- आदोलन को दबोने के लिए मरकार की कठोरता से कानून लिया।
- दबाव बढ़ गया।
- शांतिपूर्ण लोकों के लिए दिल्ली लिया गया।
- उल्लंघन कम्बोड़ा - चाहौकर भाग लेने लगी।

अविन्य अवजा आदोलन की विशेषताएँ :-

- इस लार लोगों को न केवल अंग्रेजों का सहयोग न दर्शने के लिए बल्कि औपनिवेशिक कानूनों का उल्लंघन करने के लिए। आधिन किया जाने लगा।
- यह के विभिन्न भाषाओं में दबाव लोगों ने नम्रता का नम्रता तोड़ा तथा सरकारी नम्रता का नम्रता के साथ अद्विन लिए।
- किदरी वस्तुओं का बहिर्भास किया जाने लगा।
- क्रिसानी ने लगान और चौकीयाँ ने लगाए गए दिया।

[48]

- वनों में रहने वाले लोगों ने उन कानूनों का उल्लंघन करता असंघ ने दिया।

### मविनय अवका आदोलन में मुदिलजों की भूमिका

- औरतों ने बहुत जड़ी संघर्ष में गांधी के नमक अस्त्राग्रह में मारा लिया।
- एजारों की ओरते उनकी लात भुनने के लिए चाला दीरान थोड़े से लड़ाक आ जाते।
- उन्होंने पत्नीमों के भाजा लिया, नमक बनाया, विदेशी कपड़ों और छाराव की दुकानों की धिक्रिटिंग की।
- फट मदिलाई पेस भी हड़ी।
- ग्रामीण दोनों की ओरतों ने राष्ट्र की सेवा का आपना पक्ष दाखिल माना।

### मविनय अवका आदोलन की असद्योग आदोलन से अलग था

- असद्योग आदोलन, में लक्ष्य स्वतंत्रता था लेकिन इस लाई थी अवश्यकता की मांग थी।
- असद्योग में कानून का उल्लंघन विरोध नहीं था अब उस आदोलन में कानून तोड़ना विरोध था।

### मविनय अवका आदोलन की विभिन्नता

- अनुसूचित जी भागीदारी नहीं थी ब्यक्ति लाले सभाय से कार्रवान, इनके लिए इतों की उन्देश्य को रखा था,
- महिलाएं महाराजों द्वारा मविनय अवका की काई वार्षिक उल्लंघन नहीं था ब्यक्ति 1920 की

[49]

दशालु के मध्य के भी दिन्हु धार्मिक संगठनों के करीब आते थे।  
दोनों समूहों के बीच संघर्ष और अविश्वास जा जाईल बना हुआ था।

### 1932 की पुना संघी के प्रावधान :-

इसमें इमिर वर्गी (जिन्हे लाद में अनुसूचित भारत के नाम से जाना गया) को प्रांतीय रूप के लैट्रीय विधायी परिषदों में आरक्षित स्थिति बिल गई। दालालीकृ उनके लिए मतदान सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों में ही होता था।

### सामूहिक अपेनाफन का भाव :-

वे कारक जिन्होंने भारतीय लोगों में सामूहिक अपेनाफन की भावना को खोगाया तथा उसी भारतीय लोगों को लगा किया।

चित्र ए प्रतीक :- भारत भारत की प्रथम ही लैट्रीय चर्चा स्थापित होने वाली गणाई गई। इस हीवे के माध्यम से राष्ट्र को पहचानने में महत्व मिले।

लोक कथाएँ :- राष्ट्रवादी धूम-धूम लाइ इन लोक कथाएँ पा संकलन प्राप्ति लें थे कथाएँ परंपरागत मंसकृति जी मही तरवीर पेंडा करती थी तथा अपनी राष्ट्रीय पहचान को छोड़ने तथा अतीत में गौरव का भाव पैदा करती थी।

नियन्त्र :- उद्याधरण क्षंडा :- बंगाल ने 1905 में स्वीकृती आयोजन के द्वारा भविष्यत एक तिरंगा छा, फीला, लाल (निम्नमें कमल थे)। 1921 तक आते अते भद्रतमा बांधी ने भी भर्जुद छा और ना तिरंगा तैयार कर लिया था।

इतिहास की पुनर्जाग्रत्या :- बहुत से भारतीय असमूल  
कारने वाले ने तो इस के पुरी तरीके का  
आप जगाने के लिए आप इतिहास भारतीय इतिहास को  
अपेक्षा इंग्रजों से पढ़ाना चाहिए ताकि भारतीय  
तरीके का अनुशिष्ट कर सके।

जीत जौसी बंदी सतरम :- 1870 के द्वादश में लंकिम  
पन्थ ने अहं जीत लिया मातृभूमि की रक्तुति  
के काप में अहं जीत बंगाल के द्विदेशी  
आंदोलन में छुब गाया गया।